एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मोरिंगा कोंकनेंसिस में ऐश वीविल का प्रकोप

(*दिव्या गुर्जर)
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर, जयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: divyagurjar315@gmail.com

मोरिंगा कोंकनेंसिस एक दुर्लभ व आर्थिक महत्वपूर्ण वृक्ष है जो मोरिंगेसी परिवार से संबंधित है। यह दुनिया के कई भागो जैसे पाकिस्तान, एशिया माइनर, अफ्रीका, अरब और राजस्थान में बाड़मेर, जोधपुर, जालौर, जैसलमेर, झालावाड़, पाली आदि जिलो में पाया जाता है। इस वृक्ष के विभिन्न भागो का उपयोग औषधीय गुणों और पारंपरिक चिकित्सा जैसे बुखार, सिरदर्द और पाचन विकार सहित विभिन्न प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। इसे एक सजावटी पौधों एव म्भोजन और पेयपदार्थों का स्वाद बढ़ाने के उपयोग में भी लिया जाता है।

वर्गीकरण: मोरिंगा कोंकनेंसिस मोरिंगसी परिवार का सदस्य है। टैक्सॉनॉमिक रूप से मोरिंगा को निम्नानुसर वर्गीकृत किया गया है।

किंगडम–प्लांटी
फ़ाइलम- ट्रेकोफाइटा
वर्ग- मैगनोलियोप्सिडा
उपवर्ग- डिलेनिडे
ऑर्डर -कैपरलेस
कुल-मोरिंगसी
जीनस-मोरिंगा
प्रजाति -कोंकनेंसिस

वानस्पतिक विवरण: इस पेड़ की छाल मोटी व तना चमकदार होता है। इसकी पत्तियां 2-पिननेट व कभी कभी 3-पिननेट भी होती है। इसका प्राथमिक और माध्यमिक पुष्पक्रम 30 – 45 सेमी लम्बा व आधार से मोटा होती है। इसके पत्रक का आकार 9-45, 4.5 - 3.4 × 4.2 - 2.5 सेमी, आधार से गोल, कभी कभी तिरछा पक्षीय होता है। पुष्पक्रम ढीला, पुष्पगुच्छ 40 – 50 सेमी लंबा (टोमेंटोज) होता है, पेडीकल्स 8 -43 मिमी लम्बे, डिफ्लेक्स मोटे व आधार से जुड़े हुए होते है। इसका कैलिक्स 8 खंडाकार व खंडगोल, सफ़ेद और 8-42 मीमी होते है। इसके कोरोला का रंग सफेद और आधार से लाल होता है, पुष्प-केसर की संख्या 5 और फ़िलामेंट रोएँदार होते है। फलियाँ 30-45 सेमी लम्बी, 3 कोणीय, लम्बेनुकीले, वाल्वकठोर, 10 से 18 बीज प्रति फली होते है। इसके बीच 1.5 से 2 सेमी लम्बे, त्रिकोणीय, पतली हायलाइन के साथ व सफ़ेदऔर हल्के रंग केबीज होते है।

चित्र:- मोरिंगा कोंकनेंसिस की फलियाँ और बीज

चित्र:- मोरिंगा कोंकनेंसिस के वृक्ष और फूल

संक्रमण के लक्षण: मोरिंगा कोंकनेंसिस को मार्च- अप्रैल माह में बालु, खाद, मृदा में 30:40:30 अनुपात में रूट ट्रेनर में लगाया जाता है लगभग 25-30 दिनो के बाद पौधों की सभी पत्तियों में ऐशवीवल के संक्रमण को देखा जाता हैं। इसके वयस्क (adult) पत्तियों के किनारों को नोचते है और ग्रब (larva) जड़ो को खाते हें जिससे पौधा मुरझाकर मर जाता हैं। संक्रमण गम्भीर होने पर पौधों की वृद्धि प्रतिबंधित हो जाती है और पौधा जड़ो से कमजोर होने लगता है।

चित्र:- मोरिंगा कोंकनेंसिस की फलियाँ और बीज

ऐश वीवल का वर्णन: माइलोसेरस एस पीपी ऐश वीविल का वैज्ञानिक नाम है। ऐश वीविल की प्रजातियां भारत, श्रीलंका और म्यांमार में पाई जाती हैं। इसकी लंबाई लगभग 6 से 7 मिमी होतीहै, यह लौह भूरे रंग का होता है। इसके एलीट्रा और ब्लैक मोटलिंग पर एक सफेद धब्बा होता है और प्रोनोटम् में, एक केंद्रीय पीली ग्रे पट्टी और पार्श्व रूप से एक छोटी बेसल पट्टी होती है। अंडे अंडाकार होते हैं, और हल्के पीले रंग के होते हैं, ग्रब छोटा, एपोडस और स्पष्ट रूप से घुमावदार और हल्के सफेद रंग का होता है। ग्रब लंबाई में लगभग 7 से 8 मिमी का होता है। इसके मैंडिबल्स अच्छी तरह से विकसित और मोटे दांतेदार होते हैं। उदर खंडों की तुलना में थोरेसिक खंडअच्छी तरह से विकसित होते हैं। प्यूपा भूरे रंग का और लंबाई में 6 से 7 मिमी का होता है।

चित्र:- ऐश वीवल का वयस्क और अंडा

नियंत्रण:- नर्सरी में संक्रमण से प्रभावित पौधों पर वानस्पतिक नियंत्रण किया जाता है जिसमें नीम तेल व पानी के मिश्रण (1%) का छिड़काव किया जाता हैं, जिससे प्रभावित पौधों में लक्षणों की कमी पायी गयी।